रसोई में चिड़ियाघर

कृष्ण कुमार

उन दिनों मैं पहले दर्जे में था। स्कूल से लौटकर अक्सर अपने चाचा के घर जाया करता था। उनका घर हमारे मुहल्ले ही में था। वे अकेले रहते थे। घर का सारा काम खुद करते थे। उनकी मेज़ किताबों और कागज़ों से इतनी लदी रहती थी कि देखकर लगता था, मानो अभी ढह जाएगी! लेकिन ऐसा हुआ कभी नहीं क्योंकि मेज़ के पाए किसी हाथी के बच्चे की टाँगों जितने मोटे और मज़बूत थे।

जो हालत मेज़ की थी, लगभग वैसी ही हालत चाचा के दोनों कमरों और रसोई की थी। रसोई में भी एक मेज़ रखी थी जिसपर कभी-कभी कोई

किताब-कॉपी देखकर मैं चाचा को उसकी याद दिलाता था। रसोई की इस मेज़ के पास एक ऊँची अलमारी रखी थी जो अक्सर बन्द रहती थी लेकिन मुझे मालूम था कि चाचा ने इसमें तरह-तरह का सामान रखा है - बिस्कुट और डबल रोटी से लेकर बर्तनों और बड़े-बड़े डिब्बों तक।

चाचा की एक आदत मुझे अब तक याद है। उन्हें बात करते-करते छोटी-मोटी चीज़ों के बारे में कहानियाँ बनाने का शौक था। सच बात तो यह है कि उनके घर की शायद ही कोई चीज़ होगी जिसके बारे में कोई-न-कोई कहानी उन्होंने मुझे न सुनाई हो। मेज़ पर रखे टेबल लैम्प को वे शुभा नाम की लड़की बताते थे जिसे उन्होंने पाँच साल के लिए लैम्प बना दिया था। शुभा मन लगाकर नहीं पढ़ती थी। अब लैम्प बनकर उसे हर समय किताबों पर झुके रहना पड़ता था। शायद चाचा का खयाल यह था कि पाँच साल बाद जब वे लैम्प को फिर से लड़की बनाएँगे, तब तक शुभा बहुत सारी किताबें पढ़कर होशियार बन चुकी होगी।

यह तो खैर एक छोटी-मोटी कहानी थी। उन्होंने मुझे इससे ज़्यादा बड़ी और अजीब कहानियाँ सुनाई थीं। एक किस्सा किसी देवता और उसके साथी राजा से चाचा की लड़ाई का था। चाचा बहुत भारी आवाज़ में इस लड़ाई की बातें याद करते थे। यह लड़ाई सचमुच बहुत घमासान रही होगी। एक तरफ चाचा अकेले थे और दूसरी तरफ देवता और राजा इकट्ठे लड़ रहे थे, लेकिन चाचा की होशियारी के आगे उन दोनों की न चली।

मेरा खयाल है कि चाचा ज़रूर कोई कला जानते होंगे जिसे लोग जादू कहते हैं। लड़ाई में देवता और राजा को ज़मीन पर उतारना ज़रूरी था, इसलिए चाचा ने देवता के उड़नखटोले को पंखा बनाकर और राजा के हाथी को किताबों का रैक बनाकर घर भिजवा दिया। पंखा चाचा के कमरे की छत से अभी तक लटक रहा है और रैक में उनकी किताबें भरी पड़ी हैं। चाचा ने मुझे बताया था कि इनमें से कई किताबें जादू के बारे में हैं।

सवारियाँ गायब हो जाने से दोनों दुश्मन ज़मीन पर गिर पड़े और चाचा ने उन्हें आसानी-से पछाड़ दिया। लड़ाई खत्म हो जाने के बाद चाचा अपने दुश्मनों के महल देखने गए। चाचा ने मुझे बताया था कि पहले तो उन्हें देवता और राजा के महलों में कोई चीज़ अपने मतलब की नहीं दिखी। गाढ़े रंगों वाले लम्बे-लम्बे पर्दे, मोटे-मोटे बदसूरत खम्भे, भारी-भारी कुर्सियाँ वगैरह देखकर चाचा का मन इतना खराब हुआ कि उन्होंने बाहर निकलकर एक दुकान में चाय पी। चाय पीते हुए उनके मन में आया कि वे दोनों महलों की कुछ चीज़ों को अपने काम की चीज़ों में बदलकर घर

ले जा सकते हैं। यह सोचकर वे वापस गए। राजा के सिंहासन को उन्होंने एक मूढ़े में बदल दिया और लटकते हुए पर्दों के झाड़न बना लिए। देवता के महल में चाँदी का एक थूकदान था। इसे चाचा ने पेन्सिल छीलने के कटर में बदल लिया। इस तरह के और तमाम सामान से उन्होंने अपनी ज़रूरत की चीज़ें बना लीं।

इस लड़ाई के किस्से सुनाने के बाद चाचा मुझे अपने घर की वे सारी चीज़ें दिखाते थे, जिन्हें वे देवता और राजा से जीतकर लाए थे। चाचा की मेज़ की बगल में रखा मैला-सा मूढ़ा देखकर मैं मन-ही-मन राजा के सिंहासन की कल्पना करता और छत से लटकते बिजली के सफेद पंखे को देखकर सोचता कि यह उड़नखटोले की शक्ल में कैसा लगता होगा!

***

एक बार इतवार के दिन मेरा दोस्त लल्ला सुबह-सुबह आ गया और हम दोनों ने चाचा के यहाँ जाने का तय किया। हम उनके घर पहुँचे तो देखा कि चाचा रसोई में खड़े चाय बना रहे हैं। चाचा ने हमें रसोई में आ जाने को

कहा और पूछा कि हम लोग क्या खाएँगे। चाय पीने को उन्होंने नहीं पूछा क्योंकि चाचा को हमारा चाय पीना बिलकुल पसन्द नहीं था।

"पहले आप अलमारी खोलकर दिखाइए कि आपके पास आज क्या है, फिर बताएँगे।" मैंने खूब सोचकर चाचा से कहा।

चाय की पतीली स्टोव से उतारते हुए चाचा ने मेरी बात का ऐसा जवाब दिया कि मैं और लल्ला, दोनों भौंचक्के रह गए।

"इसमें कुत्ते, बिल्लियाँ और चूहे हैं!" इतना कहकर चाचा चुप हो गए और हम लोग ठगे-से खड़े अलमारी को देखते रहे। दो मिनट बाद लल्ला ने पूछा, "वे तीनों साथ-साथ कैसे रहते हैं? बिल्लियाँ चूहों को और कुत्ते बिल्लियों को खा क्यों नहीं जाते?"

"इसलिए कि वे अलग-अलग खानों में बन्द हैं। ऊपर कुत्ते हैं, बीच में बिल्लियाँ और नीचे चूहे।"

लल्ला की बढ़ती हुई हैरानी देखकर, मैंने उसकी मदद करनी चाही, हालाँकि, मैं खुद काफी परेशान था।

"लल्ला, यह सब झूठ है," मैंने कहा, "मैं तुम्हें सच बताता हूँ। मैंने अलमारी देखी है। ऊपर के खाने में डिब्बे हैं, बीच वाले में बर्तन और नीचे डबल रोटी, बिस्कुट वगैरह।" यह कहते हुए मेरे मन में आया कि आगे बढ़कर अलमारी खोल दूँ। लेकिन मैं मुड़ा ही था कि चाचा ने मुझे हाथ बढ़ाकर रोक लिया और कहा:

"इस अलमारी में जो जानवर हैं, वे बहुत डरपोक हैं। खास तौर पर लल्ला से वे डरते हैं। इसलिए अलमारी खुलते ही सब गायब हो जाएँगे।"

चाचा की बात सुनकर लल्ला की आँखें फटी रह गईं। उसने चाचा से पूछा, "वे सब कहाँ चले जाएँगे?"

चाचा का उत्तर जैसे पहले से तैयार था, "कुत्ते डिब्बे बन जाएँगे, बिल्लियाँ बर्तन और चूहे डबलरोटी, बिस्कुट वगैरह।"

मुझे लगा कि मैं चाचा की चाल कुछ-कुछ समझ रहा हूँ। इतनी देर में लल्ला को तरकीब सूझी। उसने अपनी आवाज़ दबाकर कहा:

"चाचा! मैं छिपकर देखूँगा, आप दरवाज़े को बिलकुल थोड़ा-सा खोलिए, किसी को कुछ मालूम नहीं पड़ेगा।"

और यह कहकर लल्ला सचमुच दबे पाँव रसोई के दरवाज़े के पीछे जाकर खड़ा हो गया। चाचा अब कर ही क्या सकते थे! उन्होंने आगे बढ़कर अलमारी की कुण्डी धीरे-से खींची और साथ में कहना शुरू किया:

"ये जानवर तुम लोगों से ज़्यादा सतर्क हैं। मेरा खयाल है, वे तुम्हारी बातें सुनकर ही बदल गए होंगे, पर शायद..."

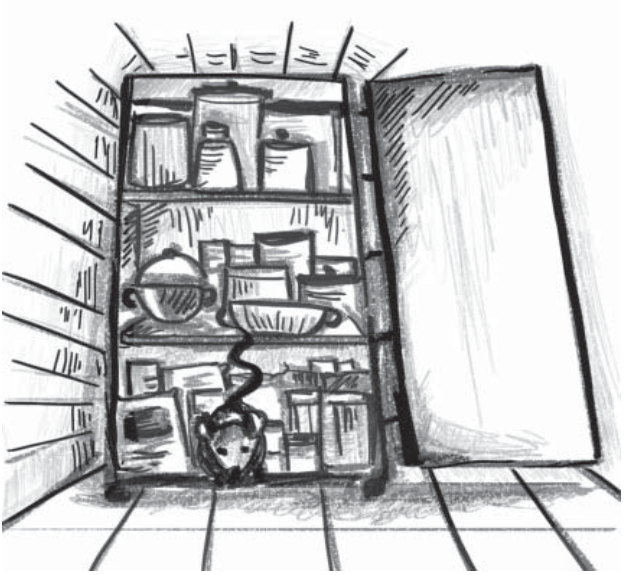

चाचा अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। अलमारी का दरवाज़ा मुश्किल से एक-दो अंगुल खुला होगा कि नीचे के खाने से एक चुहिया निकलकर भागी। उसका निकलना था कि मैं और लल्ला चीखते हुए रसोई से भागे। चाचा हमें भागते देखकर हँसने लगे और बोले, "आज मालूम पड़ा कि मेरे जानवर तुम लोगों से कम डरपोक हैं।"

कृष्ण कुमार: प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं लेखक। शिक्षा के मुद्दों पर सतत चिन्तन एवं लेखन। दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा के प्रोफेसर और एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक रह चुके हैं। भारत और पाकिस्तान में शिक्षा पर उनकी दो पुस्तकें, *मेरा देश तुम्हारा देश* और *शान्ति का समर* चर्चित रही हैं। उनकी हाल की पुस्तकों में *शिक्षा और ज्ञान, चूड़ी बाज़ार में लड़की* और बच्चों के लिए *पूड़ियों की गठरी* शामिल हैं।

सभी चित्र: पूजा के. मैनन: वर्तमान में कम्यूनिकेशन डिज़ाइन की छात्रा हैं। जन्म पलक्कड़, केरल में हुआ लेकिन एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने के कारण बहुत-से नए लोगों से मिलना हुआ। चूँकि वे अन्यथा बातचीत करने में झिझकती थीं, स्केचिंग ने उनके विचारों को सम्प्रेषित करने और टिप्पणियों का दस्तावेज़ीकरण करने में एक माध्यम का काम किया। धीरे-धीरे रेखाचित्र कहानियों में बदल गए जिन्होंने उन्हें जीवन और लोगों को समझने और खुद को व्यक्त करने में मदद की।

यह कहानी राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कृष्ण कुमार के कहानी संग्रह *आज नहीं पढ़ूँगा* से ली गई है।